अंतरा-शब्दशक्ति

मैं कहां हूं

काव्य संग्रह

ज्योति विश्वकर्मा

मैं कहाँ हूँ

(काव्य संग्रह)

ज्योति विश्वकर्मा

अन्तरा-शब्दशक्ति प्रकाशन

वारासिवनी, मध्यप्रदेश

ISBN- 978-93-86666-18-5

अन्तरा-शब्दशक्ति प्रकाशन
मुख्य कार्यालय - १५ नेहरु चौक वारासिवनी, जिला बालाघाट (म.प्र) ४८१३३१
शाखा- एस-२०७, नवीन भवन, इंदौर प्रेस क्लब परिसर, इंदौर (म.प्र.) ४५२००१
दूरभाष- (कार्या.) ०७६३३-२५३१५९ (मो) ९४२४७६५२५९
अणुडाक- antrashabdshkti@gmail.com
अंतरताना- www.antrashabdshakti.com

प्रथम संस्करण २०१८- ज्योति विश्वकर्मा
मूल्य - ५५.०० रुपये
आवरण चित्र- संदीप सोनी, वारासिवनी
मुद्रक- शैलू कम्प्यूटर्स, वारासिवनी

Main Kaha hun by Jyoti Vishwakarma

वैधानिक चेतावनी - इस पुस्तक का सर्वाधिकार सुरक्षित है। लेखक की लिखित अनुमति के बिना इसके किसी भी अंश को फोटोकापी एवं रिकार्डिंग सहित इलेक्ट्रोनिक अथवा मशीनी किसी भी माध्यम से अथवा संग्रहण और पुनर्प्रयोग की प्रणाली द्वारा किसी भी रूप में पुनरुत्पादित अथवा संचारित प्रसारित नहीं किया जा सकता है। प्रस्तुत पुस्तक की समस्त रचनाएँ लेखक द्वारा अन्तरा शब्द शक्ति प्रकाशन को प्रेषित की गई है अतः प्रत्येक रचना की मौलिकता के किसी भी दावे हेतु लेखक जिम्मेदार है। प्रस्तुत पुस्तक के घटनाक्रम पात्र, भाषाशैली एवं स्थान सभी लेखक की कल्पना है। किसी भी प्रकार के वाद-विवाद के लिए प्रकाशक का सहमत होना अनिवार्य नहीं है।

मैं कहाँ हूँ.....

पूर्णता स्वतंत्र भाव जिसमें नारी, मन, देश समाज के कुछ रंगों से मनके कैनवास पर कुछ चित्र उकेरने की कोशिश की है, विशेष तौर पर हम नारियों के मन की व्यथा जो खुद को भूल कर ना जाने कितने रंगों में जीवन के चित्रों को शोभनीय बनाती हैं।

मैं कहाँ हूँ,.. में, मेरी हर कविता में मैं खुद को ही महसूस करती हूँ और सोचती हूँ कि सच में...मैं कहाँ हूँ ..?

अपने मन के कुछ रंगों से आशा है कि आप के मन का एक कोना मैं रंग सकूं....

ज्योति विश्वकर्मा

अनुक्रमणिका

1.	मैं कहाँ हूँ	7
2.	मन ओ बावरे	8
3.	यही है फलसफा	9
4.	थक चुकी हूँ	10
5.	मैं कुछ नहीं हूँ	11
6.	मैं जर्रा	12
7.	बहुत कुछ कहना चाहती हूँ	13
8.	अमीर वो नहीं	14
9.	तुमसे ये कैसा... रिश्ता है मेरा	15
10.	हार तब तक नहीं होती	16
11.	अवकाश	17
12.	धुंधला आईना	18
13.	अपाहिज मन	19
14.	दोस्ती	20
15.	थोड़ी सी आजादी	21
16.	दादी वाले दिन	22
17.	वही दिन वही रातें	23
18.	कभी कभी मन	24
19.	तुम मेरे प्यार के काबिल नहीं	25

20. मेरा देश बदल रहा है 26
21. आज तुम माँ बहुत याद आ रही हो 27
22. सृजन तुम से होगा 28
23. क्यों मुझे मुझ जैसे लोग नहीं मिलते 29
24. जीने का जरिया 30
25. तेरा मेरा होना 31
26. बन गई चिरैया 32

मैं कहाँ हूँ

मैं तुम्हारी होकर मरना नहीं चाहती
ना तुम्हारे नाम से जीना
चाहती हूँ.... खुद से अपने लिये वो पल
जो तुम्हारे अधिकार ने मुझसे से छीन लिये हैं
गढ़ना चाहती हूँ....वो समय
जो कुछ क्षण के लिये बस मेरे अपने हों
पढ़ना चाहती हूँ.... खुद पर लिखी... वो किताब
जो तुम्हारे घर के बोझ तले दब गई है
सुबह से शाम तक एक पांव में खड़ी
तुम्हारे मेहर को साधे रखती हूँ....
कितने नामों में....
मैनें कई दिनों से अपना नाम नहीं सुना
लिखना चाहती हूँ...
घर की नेम प्लेट पर अपना भी नाम
क्यों?... अपनापन नहीं दे पाती
तुम्हारे घर की दीवारे
घूरता है... घर पर रखा कीमती सामान
जैसे मैं उनकी जगह चुरा लूँगी
बहुत बेसहारा हो जाती हूँ....
तब
जब लोग तुम्हारे घर को मेरा बताते हैं
ढूंढने लगती हूँ....
खुद को
कोई तो बता दो....
मैं कहाँ हूँ,...मैं कहाँ हूँ,...?

मन ओ बावरे

मन ओ बावरे
क्यों चैन नहीं तुझे
क्या क्या चाहत, लिये है मन में
किस आस की चाह तुझे
जो करना खुद से करना
क्यों ख्आब सजाये है तूं
कोई आऐगा.....तेरा अपना
कोई नहीं...बस है सपना
पल पल घुटती अभिलाषायें
क्षण क्षण लुटते है ख्आव तेरे
और कोई.... ना होगा
तुम्हे खुद का भार उठाना है
रो.....गा... चाहे फूट पड़ो
ये जग मतलब का सहारा है
अपनी अपनी करनी है सब
खुद चल कर ही....तो
मंजिल पाना है
छोड़ दे आस रोम की तू
कोई भी तो ना तुम्हारा है
झूठा जग..... संसार तेरा मन
तेरा कोई नहीं
अपनी अपनी ढपली सबकी
है सबका अपना राग यहां
किसी को जीवन अमृत सा है
किसी को विष का प्याला है
मन ओ बावरे....

यही है फलसफा

एक पल की जिन्दगी में
हिसाब कैसा....किताब कैसी....
बड़ी मशरूफ है ये पल भी
फुरसत कैसी.... बाजार कैसा....
दुनिया झुकती है...बस
उसी तरफ
जो किसी का नहीं
और जहां है उसका,
जो दुनिया को समझता नहीं
सक्ल तो बनी है अलग अलग
पर एक मिट्टी से
कोई काला भी तो क्या
कोई सफेद भी क्या
हम आये अपने हिस्से का
एक पल गुजारने
किसी को मुझसे क्या
मुझे किसी से क्या
पर मौहब्बत करके ये एहसास है हुआ
जिन्दगी में ये ना किया तो
जीना क्या और मरना क्या....
बहुत खुशकिश्मत होते हैं
जिन्हें मोहब्बत नसीब होती है
इसमें..... नूर क्या और हुस्न क्या
एक पल की जिन्दगी का
यही है फलसफा....फलसफा....

थक चुकी हूँ

थक चुकी हूँ तुमसे
अपने लिये थोड़ा सा
वक्त मांगते मांगते
तुम्हारा हर बार कहना कि
तुम समझती नहीं हो
मै जानती हूँ...सब मगर
तुम कभी मेरे जैसा
होकर भी देखो
यही बस चाहा मैंने तुमसे
दो घड़ी पास.... मेरी
रूह को एहसास हो बैठो
तुमसे इतनी मोहब्बत कर
बैठे है..... हम
कि अब कोई खुदा मेरा
तुम्हारी जगह नही ले सकता
रोज आंखो में सपने लेकर
उठती हूँ.... कि आज
दिल को शुकून होगा तेरे दीदार से
और तुम्हे बात करने की
फुरसत नहीं होती
यही गुनाह है मेरा ....कि तुमसे
बेपनाह मौहब्बत कर बैठे
सज़ा में हम हर रोज
जन्मों सा जिया करते हैं
थक चुकी हूँ तुमसे,....

मैं कुछ नहीं हूँ

खुद को बस चंद दिनों की
मिट्टी समझती हूँ
दुनिया की आंच पर
जिस दिन पक जाऊंगी
उस दिन में खाख हो जाऊंगी
मैं कुछ नहीं हूँ
दुनियादारी के किस्सों में
अपना सिक्का खोटा सा है
जब चाहे जिसने चला लिया
जब चाहे.....
चलन में छोड़ दिया
उस दिन मैं.....
खत्म हो जाऊंगी
मैं कुछ नहीं हूँ
खुद को देखूं तो ....
बहुत हूँ मैं
दुनिया देखे तो
मैं शून्य बड़ा
ना समझे इसमें माया.....
कोई अधमरा सा है पड़ा
जिस दिन मुझको दुनिया जानेगी
उस दिन मैं जी जाऊंगी
तब तक ....
मैं कुछ नहीं हूँ
मैं कुछ नहीं हूँ,....

मैं जर्रा

तुम आसमां हो सुरहरा सा
मैं जर्रा..... कुछ भी नहीं
उड़ने का तो मन है लेकिन
पंख मिले क्यों मुझे नहीं
नाप लेना था.... मुझे गगन भी
सपना सा है ये...हकीकत नहीं
देखती हूँ.....जब कोई परिंदा
ऊंची भरते उड़ानों को
मन में एक व्याकुलता सी....घर कर
जाती है... अरसे तक
मन ही मन वादा कर लेती हूँ
कि तूंफा के साथ... ही सही
गगन को मैं छू लूंगी
पर मैं जर्रा हूँ... तू आसमां....
तूफानों में ऐसे फस मैं जाती हूँ
फिर धरा पर ..... थक
गिर जाती हूँ
खुद को समझू तो..... पहाड़ सा
मन हो जाता है
फिर कोई..... घूर के मुझको
जर्रा बना जाता है ।

बहुत कुछ कहना चाहती हूँ

बहुत कुछ कहना चाहती हूँ तुमसे
कुछ देर तो सही... बैठो तुम पास मेरे
गुमसुम खुद से रहती हूँ....
एक तेरी याद लिये ही फिरती हूँ
तुमसे कैसे कहूँ....कि तुम मेरे क्या हो
नाराज भी होती हूँ
तो बस तुम्हें सोचती हूँ
तुम जो पास नहीं होते....तो
खुद को ही कौसती हूँ
नहीं जानती कि मौहब्बत कैसे
करते हैं
पर जब से तुम्हें जाना है
तुमसे प्यारा कोई, नहीं लगता है
बहुत कोशिश की.... इस दिल को
बहलाने की
इस दिल को ....बस
तेरी मौजूदगी चाहिये
कहते है कि तुम कुछ नहीं
समझती
हाँ सच है पर तुम्हारे
सिवा कुछ समझना
आता भी नहीं
ये एहसास कैसा है.....कि
तुम खुदा जहां
मेरी सांसे हो गये हो
बहुत कुछ कहना चाहती हूँ तुमसे,...

अमीर वो नहीं

अमीर वो नहीं जो दौलत खर्च करते हैं
बादशाह वो है..... जो दिल लुटाते हैं
यूं तो दरगाहों पर
शिवालयों पर हम फूल बहुत
चढ़ाते हैं
किसी फूल को पेट भर रोटी खिलाकर
भी देखो....
मांगने अक्सर हम वहां जाते हैं
जिनके कूंचे पर बैठे..... भूखे
हाथ फैलाते है
खुशी वो नहीं जो होठों पर हंसी हो
कभी दिल मुस्कुराया तो कहो
बहुत जोड़ते है हम ईट..मिट्टी
घर बनाने को
साथ कुछ जाता नहीं
फिर जोड़ा क्या है यहां आकर भी
राजा हो या हो रंक
सबको खाली हाथ .... जाना है
फिर क्यों ना कुछ लोग जोड़े
मरघट तक साथ जाने को
अमीर वो नहीं जो दौलत खर्च करते हैं

तुमसे ये कैसा... रिश्ता है मेरा

तुमसे ये कैसा... रिश्ता है मेरा
ना तुम कुछ कहते हो
ना मैं कुछ.....
ये खामोसिया ही
हमारी आवाज बन गई है
चुप तुम रहते हो.....चुप हम
चाहता है दिल मगर
कोई मौसम भी नहीं है
जिसमें भीगे तन भीगे मन
हजारों रोशनियों में
जलते प्यार के दो दिये
एक तुम भी एक हम भी
करीब आने के हमने.... ना जाने
कितने बहाने किये
यू तो मुश्किल से गुजर
होता है तेरी यादों की
तस्वीर से
हम तो चाहते है पूरा कारवां
जिसके शहनशाह तुम भी हो
हम भी
आधी आधी रातों को....
यू ही नींद नहीं आती थी
कुछ तो थी बात..... इधर भी उधर भी

हार तब तक नहीं होती

हार तब तक नहीं होती
जब तक हम खुद ना हार मान लें
दिया भी जलता है तब तक
जब तक तेल की एक बूंद बाकी है
बहुत कहानियां और बहुत लतीफे हैं
सब सुने सुनाये
पर जब जरूरत होती है
तो लोग अकसर भूल जाया करते है
ये बिल्कुल ना सोचना
कि कोई तुम्हे और बचायेगा
जब तक तुम आग में नहीं खुद
कूदोगे... तब तक
तपिस से तुम अनजाने ही हो
क्या हो रहा है.... ये जानकर भी
हम यू अंजान बने बैठ जाते हैं
जैसे दूध पीता बच्चा हो
थोड़ी आँखों से आँख मिलाकर
तो देखो
शायद थोड़ा कद..... हमारा खुद में
ही बढ़ जाये
माँ बहिन और बेटियाँ ..... सबका
एक ही तो रूप है
क्यों ना इसमें थोड़ा गहरा एक
काला रंग हमेशा के लिये
मिला लिया जाये
हार तब तक नहीं होती
जब तक हम खुद ना हार मान लें

अवकाश

ये धरा वसुंधरा कितनी
खूबसूरत है जी में आता है
पर फुरसत कहां है इसे देखने की
आंखों पर काले चश्में भी
बहुत खूब लगते है
अब तो शायद इतवार की छुट्टी भी
नहीं लेते है लोग
कि काम जल्दी हो.... जायेगा
पर उस इतवार का कोई पूरे हफ्ते
इंतजार था परिवार
कभी यू ही आँखे मीड़ते मीड़ते
वो बचपन के दिन याद आजाते हैं
वो गांव की सूनी सी गलियां
तपती दोपहरी ...की गरम हवायें
कच्ची अमिया
इमली.... का स्वाद
सब याद आ जाते हैं
बो दादी.... बुआ का
हँसना खिलखिलाना
लगता था कि हम कब बड़े हो जाये
आज जब बड़े हुये तो केवल
कद बड़ा हुआ है
मन अभी भी उन गलियों में
भटक रहा है
सच में ये धरा वसुंधरा कितनी खूबसूरत है

धुंधला आईना

सिर्फ ऊंचाईयों को देखना पसंद करता
है आदमी
नीचे को देखता भी नहीं
शिखरों पर है .....जो उनको जानता
है जमाना
जो हमारे काबिल नहीं
उनको पूछता नहीं जमाना
यूं अनदेखा कर देते है देखते हुये
जैसे इस चेहरे को जानता ही नहीं आदमी
पर जरूरी नहीं दुनिया में कामयाबी
ही सब कुछ हो
जो दिलों को छू ले....वो है आदमी
बहुत मतलब परस्त है ये दुनिया सुनलो
बिना काम के किसी को
पहचानता नहीं आदमी
क्या कहूँ अपनी जिन्दगी का फासाना
मैं नाकामयाब हूँ..... इसलिये
जानती हूँ ..... धुंधला आईना है आदमी
धुंधला आईना है आदमी

अपाहिज मन

वे कुछ औरतें
जो सोचती हैं कि
इन मर्दों के बाजार में बस हम बिकती हैं
जैसे चाहो खेल बनाओ
ये बेजुबान वो गुड़िया सी
इंसानों को ही खुदा बनाकर
भूखी धर्म के नाम तपती सी
वे कुछ औरतें
जिस्म पर चौटें लिये घूंघट खुद ही रखती हैं
न जाने वो कौन सी मिट्टी की हैं
सब सह लेंगी उफ न करेंगी
शिक्षा ही कुछ ऐसी है
खुद को हर पल मारकर
खड़ी हुई वो मुर्दा सी
चेहरों पर हंसी लिये मन को गिरवी रखती हैं
चार दिन की जिंदगी में वो
पल भर भी न जीती हैं
जन्म से लेकर मृत्यु तक
क्या पहचान खुद की है
किसी की बेटी, किसी की बीवी, किसी की माँ,
बस इतनी ही इसकी कहानी है
फिर भी हंसती हैं मुस्कुराती हैं
हर दिन हर गम को भूलकर, ये नई कहानी बन जाती है,..

दोस्ती

दोस्ती को मतलब के तराजू में न तौलिये
खुद कृष्ण होकर मन को सुदामा कीजिये
मतलब की इस दुनिया में
स्वार्थ को दरकिनार कीजिये
दौड़ आये मित्र तुम्हारे भी..... नंगे पांव
बस उसे दिल से आवाज दीजिये
ना दुनिया की दौलत की चाहता है
ना तुमसे ये दोस्त कोई शिकायत है
बस मुट्ठी भर चावल दोस्त को भेंट तो कीजिये
दुनिया चांवल की हण्डी जैसी हो गई
एक टटौल के औरों को न आजमाया कीजिये
ये दोस्त बस दोस्ती निभानी है हमे ताउम्र
तुम दिल की अपने दिल से धड़कने तो जोड़िये
दोस्ती का ये भी एक तरिका देखा
सुदामा ने चने न खाये होते
तो कृष्ण चावलों के भूखे न होते
हर रस्म निभाते है बेसक इस जहां में
एक पल दोस्त के संग बिताकर तो देखिये
बहुत व्यस्त है आजकल जिंदगी तेरी ओर मेरी
एक पल ही सही
दोस्त को दिल से याद करके तो देखिये,...

थोड़ी सी आजादी

थोड़ी सी आजादी हमें भी चाहिये
जीने की.....
एक अरसे से हम बंधे हुये हैं
घर की चार दीवारों में
अब हमें भी चाहिए थोड़ी सी फुरसत
इसमें से बाहर निकलने की
कैसा रिश्ता जुड़ा है हमसे
घर के चूल्हें से
बस यही निभाते निभाते गुज़र
जाती है चन्द पलों की
जिन्दगी.....
हमें भी थोड़ी बहारों मौसमों की
खुशबू ले दो.....
हमें भी .... जरा जी लेने दो
माना की गाड़ी के दो पहिये है हम
पर एक कुछ जंग सा खा रहा है,
अंदर से
थोड़ी सी आजादी हमें भी चाहिये
जीने की,...

दादी वाले दिन

बड़े ही प्यारे सबसे न्यारे
वो दादी वाले दिन
दिन भर दादी दादी करना
मम्मी की डांट को
दादी की आंख दिखाना
सुबह शाम मंदिर से
प्रसाद का हिस्सा सबको लगाना
किस्से कहानियां घेरे बैठे
घर के सारे बच्चे
हंसी ठहाकों सा बीता बचपन
वो दादी वाले दिन
गर्मी में दोरे प गीले कपड़े की बौछारें
कितना खटमिठ्ठा था अमिया और नमक
पंजी, दश्सी की वो ठेले वाली कुल्फी
कितने सुहाने थे
वो दादी वाले दिन
हाथों में दुनियां थी मेरी
ऐसा था वो बचपन
आज समझ में आते है वो
संयुक्त न्योते..... वो दादी वाले दिन
वो दादी वाले दिन ,...

वही दिन वही रातें

कुछ नहीं बदला, बस इंसान बदल गये,...
मुखोटे लगाये हुये
ये हंसते और रोते हैं
कुछ नहीं बदला, इंसानों की नियत बदल गई है,..
मुह पर मुस्कुराहट लिये
बगल में छुरा रखते हैं
कुछ नहीं बदला, बस हवा बदल गई है,..
अब पेड़ो की छाव नहीं
लोग मतलब ढूंढते है
कुछ नहीं बदला, बस लोग बदल गये,..
मेहमानों के आने पर
अब दो दिन हंसता है चेहरा
दिलों में अब रूपयों की कीमत बड़ गई है
कुछ नहीं बदला, अपनापन अब स्वार्थ में बदल गया है,..
रिश्ते नाम के, दुनिया काम की
पैसा अब भगवान बन गया
कुछ कहां बदला है जेबों में.....
सिक्कों का वजन बड़ रहा
और
दिलों में एहसास का खून कम पड़ रहा है,....
कुछ नहीं बदला, वही दिन वही रातें,.....
अब जहां की आबोहवा बदल गई है,.....

कभी-कभी मन

वृंदावन सा हर्षित
और
प्रफुल्लित
कभी कभी ये शमशान के जैसे
दहकता और फब्बकता है
कभी बेवजह ही इसकी होली और दीवाली
कभी कभी मातम सा पसरा
घेरे हमें ये साये में
कभी मन गुलमोहर सा फागुन में
महकता है
कभी पतझड़ सा सूखे पत्तों के जैसा
कभी गंगा की धारा सा मन
कभी स्थिर पोखर सा मन
कभी पहाड़ों की चोटी सा विशाल
कभी संसार में धूल सा मन
मन की गति समझ नहीं आती
बस फिरता है बनजारा सा मन
कभी कभी मन,...

तुम मेरे प्यार के काबिल नहीं

तुम मेरे प्यार के काबिल नहीं
मेरा प्यार इबादत के
जैसा है
तुम मेरे खुदा हो जाओ
ये मुझे गवारा नहीं
मेरी मौहब्बत बहुत पाकीज है
इसे तुम क्या समझोगे
एक पल की चाहत नहीं
ये कई सदियों का
हसीन सफर है
मेरी राहों के वो दो पल के
हम सफर
मेरे इस सफर को तुम क्या समझोगे
क्यों मुझे मुकम्मल आशियां
नहीं मिलता
किसी के दरवाजे नहीं तो
किसी के झरोके
हम उस फर्स की तरह बेपनाह है
जिसमें समा जाता है
आंसू भी लहू भी
बेशक तुम मेरे प्यार के काबिल नहीं,...

मेरा देश बदल रहा है

शहरों की इमारते बहुत ऊंची हो गई है
गांव के खेत बंट गये है
सब इतने व्यस्त है
किसी को कहने की ... किसी को
सुनने की फुरसत ही नहीं है
सच में मेरा देश बदल रहा है
इंसानियत खो गई है
सब मेरा मेरा करते हैं
ना दियों में तेल डालता है कोई अपनेपन का
ना सिवईयों में मिठास है
अपना अपना रंग दिखा कर
लोग बेरंग हो गये है
हाँ मेरा देश बदल रहा है
अभी नहीं तो फिर कभी नहीं
हम ना कुछ समझ पायेंगे
नफरतों की आग में जब हम
खाख हो जाये
आगे जा रहे है वो लोग
जिनको खुद से प्यार है
हम पिछडे जा रहे जा बस
जात पात है
ऊठो नहीं तो कभी ना जागोगे
तुम चाल बाजियों की नींद से
हमें धोखा बस मिला है ऊंचे ऊंचे
बाजार में
हाँ मेरा देश बदल रहा है,...

आज तुम माँ बहुत याद आ रही हो

वो बचपन के दिन वो तेरा आंचल
आंखों में पानी भर जाता है
माँ बहुत याद आ रही हो
दुनिया में ऐसा कोई नहीं
जो माँ तेरे जैसा हो
देखती हूँ जब.... किसी बच्चे को
माँ के गले लगते हुये
सच कहूं माँ ... जान निकल जाती है
माँ तुम बहुत याद आती है
आज बिन बतायें घर गई थी
माँ तुम वहां ना मिली थी
दरवाजे पर ताला देख
माँ ना जाने मैं किस ख्यालों
में खो गई थी
एक पल में ऐसा लगा ... कि मैं
सारे जहां को खो चुकी हूँ
माँ वो ताला .... तुम्हारे दरवाजे का
और मेरे मन का ताला खुलना
शब्दों में नहीं कह सकती
वो एक पल का सूना पन सा
माँ तुम क्या हो.... ये कह पाना मुश्किल होगा
उस पल माँ तुम से ज्यादा
मुझे वो लोग याद आ रहे थे
जिनके पास उनकी माँ नहीं होती
माँ तुम मुझे बहुत याद आ रही हो,....

सृजन तुम से होगा

अब कोई हाथ ना हमको
छू पाये
अब कोई आँख हम पर
यूं ही ना उठ पाये
तोड़ दो हाथ जो हमको
छूना चाहे
कब तक हम खुद को
उन नजरों से बचायेंगे
दे हुंकार कि वो आँखें
थर्राये....
बहुत हो चुका .... मोल और भाव
अब कोई तुमको ना
तौल पाये
कोई दूसरा कब तक लाज तुम्हारी
बचाऐगा
धरो रूप दुर्गा का तुम
शीष धर से उड़ा डालो
ताकत अपनी मुठ्ठी में
कौन तुम्हें हिम्मत देगा
लुटी लाज अब जब हर नारी की
कृष्ण कहा तक चीर देगा
तुम हो क्या .... ये याद रखो
कोई ना तुमसा और होगा
संसार के आरंभ से
अंत तक सजृन तुम से होगा
सजृन तुम से होगा,....

क्यों मुझे मुझ जैसे लोग नहीं मिलते

क्यों मुझे मुझ जैसे लो नहीं मिलते
क्यों पतझड़ों में फूल नहीं खिलते
हमने तो बहुत कोशिश की आईना बनने की
क्यों लोग आईनो में सूरते दिल (सच्चाई) नहीं देखते
बहुत तकलीफ होती है ये जानकार
कि जिन्हें हम अपना कहते है अक्सर
वही हमे फरेब से रूवरू कराते हैं
क्यों हमें हम जैसे लोग नहीं मिलते
हाथों में मशाले लिये हुये
दामने पाक ढूंढते हैं
अब मुझमें और हिम्मत नहीं
किसी को दिल में बसने की
हाथ में खंजर लिये .... बफायें यार ढूंढते हैं
लगता है कि खुद को फना कर दूं
कूचे कूचे फिरती हूँ शुकून ढूंढती है
वैसे तो हरामह बहुत थे जिन्दगी के
सफर में
अब दिल नहीं करता साथ चले कोई
तन्हा ही हम वो तन्हा राहे ढूंढती हैं.....?

जीने का जरिया

ये तन्हाई की रातें, और तुमसे मुलाकाते
बहुत कुछ जी लेते हैं हम
इन चार दिनों की जिन्दगी में
मेरे इश्क का तुमको खुदा बनाया मैंने
अब दिनोरात, तेरी इबादत ही करनी है मुझे
मैं ये भी नहीं चाहती की, तू भी मुझे प्यार करें
ये शुकून मेरे हिस्से का, और बस
मुझमें ही जीने दे
तुम को क्या कहें, कि हमें क्या मिल गया
सदियां निकल जाती है..... इस एहसास
को जीने में
तू मेरा है.... और बस मेरा ही रहेगा
ये हक तुम्हे भी नहीं ... कि तू इस
पर एतराज कर सके
रोती है आंखे..... दीदार को फिर भी
दिल फिर भी एक मुस्कुराहट लेकर बैठा है
कुछ नहीं, जो तुम पा ना सको
तेरा एहसास ही जीने का जरिया है मेरा,...

तेरा मेरा होना

तेरा मेरा होना अच्छा लगता है
तेरी फिकर में, मेरा जिक्र अच्छा लगता है
यू तो कहने को दुनिया है
पर तेरा मेरा होना अच्छा लगता है
मन का खालीपन ढूड़ रहा था जिसको
वही, तो तुम हो,
मुझे तेरा होना अच्छा लगता है
मेरी रहगुजर में, तेरा ठहरना
मुझे अच्छा लगता है
दुनिया से है जुदा.... कुछ
तेरे दिल में.....मुझे अच्छा लगता है
कई ख्आव सजाये इन आंखों ने
पर सब टूट जाते हैं
खुली आंखो से तुम्हें सोचना, अच्छा लगता है
बात बात पर डांटना अपना हक जताना
दिल की गहराईयों से मुझे
तेरा समझना, अच्छा लगता है
कुछ पल ही सही तुझे
मेरा होना अच्छा लगता है,....

बन गई चिरैया

बन गई चिरैया, अँगना की तेरी
ना कोई घर न, कोई देश...ओ बाबुल.....
अपना कहा, जिस माटी
को हमने.....
हो गई पल में पराई, क्यों बाबूल
ना कोई घर, न कोई देश
बचपन की सखियाँ, वो गाँव की गलियां
छूटा मेरा वो अँगना.... ओ बाबुल.....
न कोई घर, न कोई देश
भैया को तुमने, अपना बनया
हमको किया क्यो, खुद से दूर...ओ बाबुल.....
न कोई घर, न कोई देश
हमसे तो अच्छी, तेरे अंगना की माटी
जो तेरे द्वार पड़ी...ओ बाबूल .....
न कोई घर, न कोई देश
रोये मेरा जियरा, करूं करे सबसे भेंटे
कोई तो लेता, हमको रोक.... ओ बाबूल.....
न कोई घर, न कोई देश
बन गई चिरैया, अँगना की तेरी,....

व्यक्तित्व दर्पण

नाम - ज्योति विश्वकर्मा
जन्म - 20.09.1982
शिक्षा - बी.ए.
पता - श्री मोहन प्रसाद विश्वकर्मा, विद्या पुरम बटालियन रोड मकरोनिया, सागर (मध्यप्रदेश)
ई मेल - Jyotivishwakrma@gmail.com
मो. - 8989281167
प्रकाशन - कहानी, काव्य एवं रचनाऐं प्रकाशित।
सम्मान - 1. अंतरा शब्द शक्ति सम्मान
2. हिन्दी सेवी सम्मान 2017।
3. काव्यश्री सम्मान 2018।
4. श्रेष्ठ युवा रचनाकार सम्मान 2018।
5. एक्सीलेंट लेडी अवॉर्ड 2018।
6. बिलासा सम्मान 2018।
7. नारी शक्ति सम्मान।
8. प्रतिभाशाली रचनाकार सम्मान।

यदि आप अंग्रेजी में हस्ताक्षर करते हैं तो निवेदन है कि 'हिन्दी में हस्ताक्षर करें', आपकी यह छोटी-सी कोशिश हिन्दी को राजभाषा से राष्ट्रभाषा बनाने में अमूल्य योगदान देगी ।

अन्तरा शब्दशक्ति
www.antrashabdshakti.com
१५, नेहरु चौक, मेन रोड वारासिवनी, जि. बालाघाट (म.प्र.) पिन ४८१३३१,
संपर्क- ९४२४७६५२५९,
अणुडाक: antrashabdshakti@gmail.com
978-93-86666-18-5
मूल्य- 55/-